International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182 Print ISSN: 2349-5979
www.allsubjectjournal.com
Volume 2; Issue 12; December 2015; Page No. 37-40

जनजातियों की सृष्टि एवं उत्पत्तिः एक विवेचनात्मक अध्ययन

डॉ तृप्ति मांझी

अतिथि व्याख्याता, जनजातीय अध्ययन विभाग, रानी दुर्गावती विष्वविद्यालय, जबलपुर

मानव या जन की उत्पत्ति की व्याख्या करने पर सर्वप्रथम पृथ्वी पर विचार करना आवष्यक है। पृथ्वी की भी उत्पत्ति हुई, लेकिन कब ? कैसे ? यह भूगर्भवेत्ताओं का विषय है। अनेक भूगर्भवेत्ताओं ने प्रकारान्तर से पृथ्वी की उत्पत्ति 4 अरब एवं सवा दो अरब वर्ष होना कहा है। जगद्गुरू श्री कृपालु जी महाराज के ''प्रेमरस सिद्धांत''[1] में भूगर्भषास्त्रियों के अनुसार पृथ्वी की आयु 10 करोड़, लेकिन प्रो. पेरी की रेडियम की खोज के हवाले 10 करोड़ वर्ष से अधिक का उल्लेख किया है, तथा मि. जॉन. टी. रोड को नेवादा की खुदाई में प्राप्त जूता की आयु 60 लाख वर्ष होना और हेकल आदि के अमीबा की निर्मिति के 22 चरण बाद मनुष्य की उत्पत्ति या विकास के क्रम में 22 करोड़ होना निरूपित कर हेवल के 8 लाख 20 वर्ष को अस्वीकार कर षास्त्रीय दृष्टि से 1 लाख 95 वर्ष तथा 14 मनु की आयु 4 अरब 32 करोड़ वर्ष की अनुमानित आयु दर्षायी है। उन्होंने डार्विन व हेवल आदि का बंदर, वनमानुष आदि से मानव के सृजन पर हास्य व्यक्त किया है और डार्विन के पुत्र जार्ज डार्विन के 1805 के कथन एवं इंग्लेण्ड की विज्ञान सभा में डॉ. ला के कथन, कि सृष्टि का रहस्य अब भी एक रहस्य है और अभी तक कुछ भी खोजा नहीं जा सका है, उल्लेखित किया है।

डॉ. ज्योतिप्रसाद जैन [2], ''भारतीय इतिहास एक दृष्टि'' ने निर्जीव या अजोइक युग 1.80 अरब से 2 अरब जीवयुग का प्रारंभ क्रमषः पुरातन जीवयुग (पेलेजोइक), मध्यजीवयुग (मेसेजोइक) और नव्यजीवयुग (केनेजोइक) माना है, जिसमें षनैः–षनैः जलचर, नभचर, थलचर, प्राणियों व जीवों, जलीय व स्थलीय वनस्पतियों, पेड़–पौधों का विकास हुआ है। पृथ्वी में बड़े–बड़े भू–परिवर्तन हुये है, जिससे जल के स्थान पर भूमि, भूमि के स्थान पर जल आया है। जबलपुर की पूर्णिमा पाण्डे [3] ने एक दैनिक समाचार के प्रकाषित लेख में दर्षित किया है कि पृथ्वी का विखण्डन हुआ और उसका एक पृथक भाग मंगल बना और उक्त रिक्त भूभाग में समुद्र सृजित हुआ। मेरा मत है कि पृथ्वी के विकास का यह एक कारण है। विखण्डन के जोरदार धक्के से पृथ्वी और मंगल के पथ में परिवर्तन होने से पृथ्वी में ऋतुएं बनी, बदली; जो पृथ्वी और सृष्टि के सृजन का आधार बनी है। मंगल में सृजन आज भी रहस्यमय है।

रांगेयराघव [4] ''महायात्रा गाथा–1'' ने लेख किया है कि धरती का प्रथम मनुष्य जावा का पिथीकैथोपस, तदुपरान्त द्वितीय मानव आये, लुप्त हुये और पुनर्जीवित हो पृथ्वी में अन्य जाति के रूप में विचरण करने लगे। तृतीय मानव नीन्डर–थैलियन के साथ ही चौथा भी उद्भूत हो लुप्त हुआ। पांचवां क्रोमैनन रूसीस्टेपीज से स्पेन तक फैला और छठा होमोसेपियन उद्भूत हुआ, जिसके वंषज आज हम हैं। मानव के विकास की यात्रा में लाखों वर्ष बीते, जिसमें पृथ्वी में प्रलय, प्रकृति उत्पात, भू–जल परिवर्तन, हिमयुग, प्रलय आदि से विनाष और विकास का क्रम चलता ही रहा है। कभी आस्ट्रेलिया, भारत, अफ्रीका, अमेरिका के भूभाग अखंडित थे, भारत के उत्तर में समुद्र था। भू–गर्भीय हलचल से हिमालय और उत्तरभारत की भूमि का उदय हुआ और आस्ट्रेलिया, भारत, अफ्रीका, अमेरिका के भू–भाग पृथक हो गये। भारत को लैमूरिया कहा जाता था। बाद में पाष्चात्य विद्वानों ने गोंडवाना नाम दिया। रांगेयराघव [5] ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास'' ने लेख किया है कि षिवालिक के बंदर, चीते, तेंदुए, जंगली बिल्ली, जरख प्लाइस्टीन युग में यूरोप व चीन में पाये गये, जो अफ्रीका में पाये जाते हैं। संभवतः जलवायु एवं भौगोलिक परिवर्तनों के कारण ये भारत से पष्चिम गये। क्वार्टनरी युग में तापमान की कमी पर भारत में 1 लाख से 15 लाख वर्ष पूर्व मनुष्य के अवषेष मिले हैं। गोरखपुर, बयाना, स्यालकोट, बिलोचिस्तान में नाल और आदि चन्नल्लूर में प्राचीन खोपड़ियां पायी गई है। विद्वानों के अनुसार ये आर्य और द्रविड़ से प्राचीन है। इस समय जिन जातियों का होना पाया गया है, वे हब्षी और निषाद जातियां हैं। नर्मदाघाटी में नरसिंहपुर के भूत्रा और दक्षिण हैदराबाद में पैठन के मूंगी में लाल पत्थर, पत्थर के औजार और पषुओं की हड्डियां मिली हैं, जो प्रि–चिलियन इओलिथिक कल्चर की है। विषेषज्ञों के हवाले लेख है कि दक्षिणभारत का पैलियोलिथिक मनुष्य जंगलों में नहीं, मैदानों में निवास करता रहा है, वह बर्बर नहीं था। गुफाओं में निवास करता था, जहां टोटम, जादू, पषु, तीर–तरकष आदि के चित्र गेरू से बने हैं। पंचानन के हवाले भारत में युगों की तालिका में दर्षित है कि 40,000 से 24,000 ई.पू. पूर्वी भारत में मैसोलिथिक युग, 24,000 से 16,000 ई.पू. सिंघनपुर व मिर्जापुर में गुफाकाल, 10,000 ई.पू. क्रीट, सूसा, अनान के समकालीन सिंधुघाटी सभ्यता का प्रारंभ, 6000 ई.पू. बांदा, 4000 ई.पू.– पूर्व वांषिक मिस्त्र (पष्चिम एषिया, अफ्रीका) तथा पूर्वी भारत में लौहयुग एवं 2500 से 1900 ई.पू. मिस्त्री 11–13 वीं पीढ़ी और मोहनजो–दड़ो का युग रहा है। सतयुग, त्रेता, द्वापरयुग के कालखण्डों के निर्धारण पॉर्जीटर व पी.वी. काने ने किया है, लेकिन उनमें साम्यता नहीं पायी गई है। जहां उपरिदर्षित रांगेयराघव [5] ने निषाद व हब्षी को भारत में 1 से 15 लाख वर्ष पूर्व पायी गई मानव जाति माना है, तो भगवानसिंह [6] ''भारतीय सभ्यता की निर्मिति'' में निषाद–समुद्रपुत्र को दक्षिण–पूर्व एषिया और दक्षिण एषिया की आस्त्रिक (आस्ट्रिक) जाति होना और 50–60 हजार वर्ष पूर्व नौका द्वारा भारत के समुद्री तटों में फैलकर बसने एवं नौका द्वारा विष्व व्यापार करने, नौका निर्माण की कला में निपुण, समुद्र मंथन करने वाली अत्यन्त साहसिक व मछली का षिकार करने वाली जाति होना माना है और यह भी दर्षाया है कि आदिम सभ्यता में भारत सबसे अग्रणी नौका चालक देष रहा है। भारतीय संदर्भ में निषाद के अर्थ– एक, वधिक और आदिम अवस्था में नर वधिक तथा दो, नौका चालक हैं। रांगेयराघव, भगवानसिंह और हिन्दी विष्वकोष में मत भिन्नता है। रांगेयराघव ने निषाद को भारतीयजन माना है, तो भगवानसिंह ने आस्ट्रिक। हिन्दी विष्वकोष [7] खण्ड–4: नागरिक प्रचारिणी सभा ने भी निषाद को हब्षी के बाद भारत में पदार्पित माना है और गोंड, कोल, भील, संताल आदि को उनके वंषज होना माना है। यहां इस दृष्टि से विचार करना होगा, कि लाखों–करोड़ों वर्ष की विकास यात्रा में पृथ्वी की हलचल से भू–भागीय परिवर्तन हुये हैं, जैसा कि आस्ट्रेलिया, दक्षिण भारत, अफ्रीका व अमेरिका भू–भाग एक था, जो कालान्तर में विखण्डित हो गया और उनके तट समुद्रीय हो गये। रांगेयराघव [5] में उपरिदर्षित है कि जलवायु एवं भौगोलिक परिवर्तनों के कारण अथवा नौका निर्माण, नौका चालन, मत्स्याखेट की दक्षता और व्यापार के कारण भारत से पूर्वी व दक्षिण–पूर्वी एषिया तथा आस्ट्रेलिया जाने, बसने और मूल

स्थान भारत वापस आने पर छूटे हुये अवषेषों के पाये जाने पर उसे आस्ट्रिक माना गया हो। हिन्दी विष्वकोष [8], खण्ड–6 में दर्षित है कि निषाद संस्कृत का अतिप्राचीन षब्द है, जो वैदिक युगीन है, जो जलयानों से यातायात, आयात–निर्यात करने वालों में रूढ़ था। द्रविड़ों को भी निषाद कहते थे, क्योंकि उनमें भी समुद्री व्यापारियों की प्रधानता थी। लोकभाषा में इन्हें केवट व मल्लाह कहते हैं। ऐसे ही एक निषाराज ने वनयात्रा के समय राम की सेवा की थी। आर्यों के दो स्वतंत्र राष्ट्रों के संघर्ष में निषाद का आवाहन सहयोग हेतु किया गया है। ऋग्वेद की एक ऋचा है– ''तदथ वाचः प्रथम मंसीय, येनासुरां अभिदेवा असाम''। उर्जाद उत यज्ञिवासः। पंचजना मम होत्र जुषध्वम।'' इस मंत्र के 'पंचजनाः' की व्याख्या अपने निरूक्त में यास्क ने ''चत्वारो वर्णाः पंचमो निषादः'' से की है अर्थात आर्यों के चार वर्ण और पांचवां निषाद (सम्पूर्ण भारत)। पंचायत षब्द का उद्भव संभवतः इसी से ही है। प्रो. एम.एल. गुप्ता व डॉ. डी. डी. षर्मा [9], ''सामाजिक मानवषास्त्र'' में संस्कृत साहित्य की निषाद जाति और फान इक्सटेड्स की वेड्डिड को प्रोटो आस्ट्रेलियन माना गया है। जे.एच. हट्टन [10], भारत की जनगणना 1931 में लेख किया है कि आज भारत में व्यापक पैमाने में भारतीय जनजातियों में प्रोटोआस्ट्रेलायड प्रकार पाया जाता है, यद्यपि दक्षिण भारत व छोटा नागपुर क्षेत्र की जनजातियां वैदिक आर्यों के द्वारा दिये गये विवरणों के अनुसार निषादिक (निषाद) हैं, जिन्होंने भारत के विभिन्न पर्वतीय व वन क्षेत्रों में आधिपत्य जमा लिया है। इस प्रजाति को प्री–द्रविड़ियन, प्रोटोआस्ट्रेलायड और वेड्डायड नाम दिया गया है, परन्तु वैदिक आर्यों के अनुसार जिसे मि. चांदा ने प्रस्थापित किया है और जिसे गैर–निग्रोयड भारत की जनजातियों के लिये निषाद पदनाम प्रयुक्त किया जाना उचित है।

रांगेयराघव [5] ने लेख किया है कि निषाद बहुत प्राचीन जाति है, जो बहुत समय तक सषक्त थी, जिसका बहुत परवर्ती काल में उल्लेख पाया गया है। जिसके वंषज आज भी हैं। आर्यों से इनका संबंध बना, तो चार वर्ण बने, लेकिन इसे उससे पृथक रखा गया। महाभारत में उसे एक पहाड़ी मलेच्छ जाति कहा गया है। रामायण में यह मध्यभारत में पायी जाना उल्लेखित है। महीधर ने निषादों को भील या भिल्ल कहा है। एक समय निषाद गंगा–जमुना के वासी थे। वैदिकयुग में निषाद से संबंधित जातियां– निषाद, मत्स्य, मारगार, कैवर्त, केवर्त, दास, का उल्लेख पाया गया है। यह भी कि प्रारंभ में निषाद षूद्रों से पृथक धनी राजा थे, जो कभी नहीं दबे, इसलिये उन्हें पंचम वर्ण माना गया। निषाद नरेष नल वीरसेन का पुत्र था, जिसका विदर्भकुमारी दमयंती से विवाह हुआ था। राम के समय में गुह निषाद ने नदी पार करायी थी। निषादों का गंगा तीर पर राज्य था, उनकी राजधानी श्रंगपेरपुर थी। ह्लादिनी गंगा पूर्व की ओर निषाद, किरात, कलिंजर आदि प्रदेषों से होकर समुद्र में गिरी है। महाभारत में नकुल ने मलेच्छ राजाओं को, सहदेव ने मत्स्य, पटच्चर, निषाद जाति को हराया। भगदत्त मलेच्छ देष का राजा था। सत्यवती निषाद कन्या थी, उसका व्यास से संबंध बना। निषादपति हिरण्यधनु का पुत्र एकलव्य था, जिसने द्रोण को दक्षिणा में अंगूठा दिया। युद्ध में अर्जुन ने उत्तर–पूर्व के मलेच्छों को, भीम ने अनेक के साथ निषादपति, मलेच्छ राजाओं को तथा सहदेव ने मत्स्यराज, निषादभमि, समुद्री मलेच्छ राजाओं की तथा नकुल ने पष्चिम में कैवर्त एवं समुद्री व जमीनी मलेच्छों को तथा धर्मराज ने समुद्रीतीर वासी मलेच्छों को पराजित किया था। कृष्ण ने निषादपति एकलव्य का वध किया था तथा कृष्ण–अर्जुन ने अनेक असुर, राक्षस तथा निषादों को मारा था। कलियुग में प्राचीनकाल से सषक्त रही निषाद जाति की षक्ति क्षीण हो चुकी थी।

रांगेयराघव [5] में पी.वी. काने ने 1000 ई.पू. में वर्ण, जातियों व पेषों की सूची बनायी है, जिसमें क्रमांक 16– कैवर्त, 27– धैवर, 28– निषाद या नैषाद, 34– बैन्द, 54– षवर तथा 500 ई.पू. में 61– दास (मछुए), 66– धीवर, 72– नैषद (चातुर्वर्ण्य के अतिरिक्त), 88– भिल्ल, 94– मत्स्यबंधक, 106– मलेच्छ का उल्लेख किया गया है। महावीर के काल में भी निषाद व निषध जातियां रही हैं। मलेच्छ (पहाड़ी, बर्बर) जातियों को भारतीय बनाने में बौद्ध सबसे आगे रहे हैं। वैदिक युग में असुर, दानव, दैत्य, राक्षस, पिषाच, यक्ष, किन्नर, गंधर्व, नाग आदि अनेक जातियां रहीं, वे आर्यों में समाहित हो गयीं। इसके अतिरिक्त अनेक भौगोलिक नाम की जातियां– काम्बोज, गांधार, कुरू, पांचाल, सौरसेन, चेदि, भद्र, मालव, षाल्व, उषीवर आदि और अनेक अनार्य– आमीर, दरद, कारूष, कुलट, कुलिन्द, बर्बर, मुरूण्ड, निषाद, लम्पान, योन, दमिल, षवर, मूतित, पुलिन्द, कुन्तल, नासिक्य, अष्मक, भूलक, चोल, केरल, चेर, पुण्डू, काक इत्यादि जातियां थी। आक्रमणकारियों में हूण, षक, पहलव आदि आयीं, बस गयीं और भारतीय बन गयीं।

वामनपुराण [11], संक्षिप्त विष्णुपुराण [12], श्री श्री विष्णुपुराण [13], संक्षिप्त गरूणपुराण [14], पद्म पुराण [15], स्कंद पुराण [16], भक्तचरितांक [17], श्रीमदभागवतपुराण [18] में राजा वेन, निषाद व पृथु के कथा प्रसंगों में परस्पर भेद है। पुराणों में उल्लेख है कि ऋषियों द्वारा वेन का वध किये जाने के उपरान्त उत्तराधिकारी की उत्पत्ति हेतु किन्हीं पुराणों में वेन की बायीं भुजा, किन्हीं में जंघा या बायीं जंघा, किन्हीं में षरीर का मंथन किये जाने पर एक काले, जले ठूंठ सा नाटा मनुष्य उत्पन्न हुआ, उसे निषाद नाम दिया गया और उसे विंध्याचल का राज्य संचालन करने भेज दिया गया। उसी विंध्याचल को मलेच्छ राज्य भी कहा गया है। पृथु को भी षरीर के मंथन अथवा दायें हाथ के मंथन से उत्पन्न हो दर्षाया गया है और उसे राजा वेन का उत्तराधिकारी बनाया गया। यद्यपि इसका कोई उल्लेख नहीं है, लेकिन मंथन का आषय वीरों की युद्धकला में प्रावीण्यता, षौर्यता तथा श्रेष्ठता का चयन किया जाना संभावी है, क्योंकि निषाद मानव की उपस्थिति लाखों वर्ष पूर्व अतिप्राचीन होना माने जाने पर 2–3 हजार ई.पू. निषाद का उत्पन्न होना विरोधाभास उत्पन्न करता है और स्पष्ट करता है, कि उत्तराधिकारी परीक्षा में प्राचीनजन का निषाद पुरूष भी चयनित हुआ था।

नंदराम निषाद [19] ''निषादों का इतिहास'' में प्रचुर प्रसंगों को संक्षिप्त में प्रस्तुत किया है। निषाद षिकारी के सारस वध पर महर्षि बाल्मीकि ने षोक व्यक्त किया– ''मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमः षाष्वती सभाः। यत क्रौंच मिथुनादेकमवधीः काममोहितम''।। डॉ. बालमुकुन्द मुखर्जी की पुस्तक ''हिन्दू सभ्यता'' के हवाले लेख है कि सिंधुघाटी सभ्यता का काल 3250 ई.पू. से 2750 ई.पू. रहा है और जिसके स्थापक निषाद रहे हैं। ऋग्वेद के 'पंचजन' निषाद (8–83–7), जैमनीय उपनिषद ब्राम्हण (2,440) में 'निषद प्रदेष', षंकर के वेदान्त सूत्र (1–4–12) का उल्लेख इस प्रकार है– ''कैचुति देवाः पितरो गन्धर्वा असुरा रक्षासि च पंचजना व्याख्या अन्यैश्रच चत्वारो वर्णा, निषाद पंचमा परिग्रहीताः''।

बाल्मीकि रामायण के बालकाण्ड सर्ग 2/10, 15; अयोध्याकाण्ड 56/21 आदि अनेक सर्गों में निषाद व निषध प्रदेषों; महाभारत में अनेकों निषाद राजाओं, कौरवपक्ष में निषादपति घृष्टधुम्न, निषादपति, निषाद राजेन्द्र, निषाधीष्वर आदि पद संबोधन एवं निषाद पर्वत, निषादभूमि, निषादराष्ट्र, निषधावती नदी आदि अनेकों और यह भी उल्लेख है, कि निषादों की मान्य परम्परानुसार निषाद चन्द्रवंषी थे, त्रेतायुग में ययाति प्रथम स्थापक, आदि गुरू कष्यप, दैत्यगुरू षुक्राचार्य, दुष्यन्त, नल आदि निषादवंषीय रहे हैं। महाभारत में सत्यवती जो निषादराज दाषरथि की कन्या मत्स्यगंधा के नाम से विख्यात है, जिसका कानीनावस्था में ऋषि पाराषर से कृष्णद्वैपायन व्यास और राजा षांतनु से कौरव व पाण्डव कुल का जन्म हुआ। पूर्व वैदिककाल से निषाद–द्रविड़–आर्य में वैवाहिक व रक्त संबंध बने हैं। पंचम निषाद से ब्राम्हण व क्षत्रिय विवाह करते आये हैं।

प्रथम पैरा में जगदगुरू श्री कृपालुजी महाराज [1] ने जान.टी. रोड द्वारा 60 हजार वर्ष सिला हुआ जूता खुदाई में पाये जाने का उल्लेख किया है, जिससे स्पष्ट हो जाता है, कि मानव सभ्यता के विकास का क्रम करोड़ों वर्ष पूर्व का है और जो ध्वनित करता है, कि सृष्टि के सृजन से मानव का सृजन कई करोड़ों वर्ष पूर्व हुआ है।अतः निर्विवाद

रूप से यह अमान्य नहीं किया जा सकता कि अति प्राचीन भारत व्यापी निषादों ने अपनी सभ्यता का क्रमषः सृजन–स्थापन किया है और जो स्वाभाविकतः लाखों वर्ष प्राचीन और अति विकसित रही है। श्री नंदराम निषाद [19] ने चन्द्रपंचांग का उल्लेख किया है, जिसमें चन्द्रमा की 24 कलाओं को कल्प और 20 वें कल्प को निषाद कहा गया है। कुछ विद्वानों ने निषाद को कृषि का जनक, चन्द्रमा के अनुसार दिन, मास व वर्ष का निर्धारक आदि कहा है। नौका निर्माण व नौका चालन, हल्दी, सिन्दूर, वस्त्र का उपयोग, विवाह में फेरे, कौड़ियों से गिनती आदि का प्रचलन निषादों द्वारा प्रारंभ किया गया है, जिससे यह स्पष्ट हो जाता है कि लाखों वर्ष की यात्रा में स्वदेषी निषादजनों में भारत व विष्व में उत्कृष्ट सभ्यता व बोली–भाषा का विकास व स्थापना की है। पुराणों में अनेक मन्वंतरों और ब्रम्हाओं का उल्लेख आया है। वामनपुराण [11] भगवान विष्णु की नाभि से ब्रम्हा उत्पन्न हुये। श्रीविष्णुपुराण [12] एवं श्रीश्रीविष्णुपुराण [13] में भृगु, पुलस्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मारिचि, दक्ष, आत्रि, वषिष्ठ तथा संक्षिप्त गरूणपुराण [14] में भृगु, पुलस्य, पुलह, अंगिरा, मारीचि, आत्रि, वषिष्ठ, धर्म, रूद्र, मनु, सनक, सनातन, सनतकुमार, रूचि, श्रृद्धा, नारद और श्रीमदभागवत पुराण [18] में भृगु, पुलस्य, पुलह, क्रतु, अंगिरा, मारीचि, दक्ष, आत्रि, वषिष्ठ का ब्रम्हा होना दर्षाया गया है। धर्म, त्याग, दान, तप, साधना की परम्परा नैषादिक युग से प्रचलित रही है। वेदादि साहित्यों में किसी ऋषि–महर्षि की न तो जाति और प्रजाति का कोई उल्लेख है और न ही किन्हीं प्राच्य–नृजातीय, समाजषास्त्रियों व इतिहासकारों ने ही इस संदर्भ में अनुसंधान व लेखन किया है। फलस्वरूप यह पूर्णतया संभव है कि स्वदेषी आदिम निषादों में भी ऋषि–महर्षि–ब्रम्हा हुये हैं।

देषी और पाष्चात्य नृजातीय–समाजषास्त्रीयों व विद्वानों ने देष में अनेक मानव प्रजातियों का अस्तित्व होना और उनसे जातियों व जनजातियों का उद्भव होना दर्षाया है, लेकिन स्वदेषी आदिम और वैदिक युगीन निषाद जाति का उल्लेख रामप्रसाद चांदा के हवाले जे. एच. हट्टन [10] ने किया है कि भारत की जनजातियों के लिये प्री–द्रविड़ियन, प्रोटो–आस्ट्रेलायड, वेड्डायट, गोन्डिड, कोलिड आदि नाम प्रयुक्त किये जाने की अपेक्षा वैदिक आर्यों द्वारा प्रस्थापित निषाद नाम उपयुक्त है। यह भी विचारणीय है कि कई प्रजातियां व जातियां भारत के प्रागैतिहासिक विकास और सभ्यता की स्थापना में प्रादुर्भूत हुई है, उन्हें स्वदेषी जातियां व जनजातियों से भिन्न माना जाना कदाचित भी उपयुक्त नहीं है। उसने ''रेस, ट्राईब, कास्ट'' के वर्गीकरण में देष की समस्त जनजातियों को 3 प्रमुख समूहों में वर्गीकृत किया है, जिसमें प्रमुख समूह– एक को वनोपज संग्रहकर्त्ता और कृषक माना है, जिनमें अन्दमानीज, अरन्दन, चेन्चू, कादन, उराल, षोलागार, हासला जनजातियां है। प्रमुख समूह–दो को पषुपालक–चरवाहों में टोडा को माना है। प्रमुख समूह–तीन की जनजातियों को कृषक, षिकारी, मछली पकड़ने और उद्योगकर्त्ता माना है और उन्हें 11 समूहों में वर्गीकृत किया है, यथा– एक, दक्षिण भारतीय समूह है, जिसमें इरावालन, कोटा, कुडिया, कुरीछन, कुरूमन, मर्राठा, मावीलान, मालासर, पनियान, पाल्लियान जनजातियां तथा समूह–दो, भील समूह में बारेला, भील, भिलाला, धनका, मानकर, मावची, पाटिया, तडवी, गिरासिया, मीना, मेव, मेर, मेरत जनजातियां है। समूह–तीन, कोली में बारिया, भल्ला, चौधरा, गेडिया, खांत, कोली, कोतवाल, नाइकडा, पटेलिया, पाटनवाडिया, ठाकरदा, तलबदा, वाल्वी है। समूह–चार, कोल में असुर, अगरिया, बिंझिया, बिरजिया, बैगा, भैना, बिंझवार, भारिया, भुंजिया, भुमिया, भुंइया, घटवार, कादर (बंगाली), खेटवारी, नैया, पावो, बिरहोर, चेरो, गदबा, हो, कोल, खरवार, खरिया, मवासी, भोगता, भूमिज, मुण्डा, कोरा, जौंग, कोरकू, कोरवा, मझवार, माझी, नागेसिया, पुरहइया, पहिरा, संताल, सौंता, करमाली, सवरा, सौंर, सवर, सहरिया, तुरी, महली जनजातियां है। समूह–पांच, ओरांव में बयार, वनमानु, धनगर, मुसहर, मालेर, मालपहरिया, ओरांव है। समूह–छः, गोंड में धनवार, गोंड, कलोटा, कमार, कवर, कोलम, कोंध, कोंडा, डोरा, कोया, मारिया, मुरिया, नागरची, भतरा, परधान, परजा है। समूह–सात, बोडो में गारो, हाजिंग, कचारी, मेच, राभा और समूह–आठ, कूकीचिन में मीषेल, कामी, लाखेर, बनजोगी, लूसी, सोक्ते, थाडो एवं समूह–नौ, मान–ख्मेर में खासी और सेन्तेन्ग, निकोबारीज, पालाउंग व अन्य है। समूह–दस, ताई में अहोम, खामती, षान और समूह–ग्यारह, अन्यों में बढ़गा, ग्रो, कारेन, नागा, साक, सलोन, सिंगपो, काचिन, थारू, भोकसा जनजातियां सम्मिलित हैं। उल्लेखनीय यह है कि ये समस्त जनजातियां भौतिक रूप से भले ही अतिप्राचीन हो, लेकिन इनके नाम वे नहीं हैं, जो वैदिक साहित्यों में उल्लेखित है और जिन्हें पी.वी. काने ने 1000 व 500 ई.पू. की जातियों को सूचीबद्ध किया है। जनजातियों का नाम परिवर्तन अपभ्रंष, पेषा, पद, जातीय–मिश्रण, सामाजिक परम्परा, पंचायत व्यवस्था, दण्ड–बहिष्कार, रोजगार हेतु पलायन, यौद्धिक विजय–पराजय आदि से स्थान परिवर्तन एवं समूह, उपजाति, विभाग, उपविभाग का उद्भव, बोली के अपभ्रंष और स्थानीयजनों द्वारा प्रदत्त नाम व पहिचान के कारण परिवर्तित नाम से निरन्तर रूढ़ होते गये है।

निष्कर्ष

उपरिदर्षित अनुच्छेदों से यह स्पष्ट हो जाता है कि निषाद जाति प्रागैतिहासिक काल से ही नौका निर्माण, नौकाचालन, समुद्र–नदी व्यापार, मत्स्याखेट, कृषि, पषुपालन व उद्यम–उद्योगों आदि की जनक और दक्ष रही है। आवष्यकता आविष्कार की जननी है, जिस कारण उसने नित–नई आवष्यकताओं पर उद्यम प्रारंभ किये, जिससे वे पेषों की दक्षता के आधार पर पृथक जनजातियां और कालान्तर में जाति के रूप में रूढ़ होते गये। जिनमें से अनेक जनजातियां चातुर्वर्ण्य व्यवस्था की अंग बन गई। जे. एच. हट्टन के उक्त वर्गीकरण में प्रमुख समूह–एक को कृषक, दो को गोपालक–चरवाहा और तीन, जिसमें ग्यारह उपसमूह– दक्षिण भारतीय, भील, कोली, कोल, ओरांव, गोंड, बोडो, कूकीचिन, मान–ख्मेर, ताई व अन्यों की जनजातियों को कृषक, षिकारी, मछुआ और उद्योगी होना दर्षित किया है, जिससे स्पष्ट है कि भौगोलिक एवं पारिस्थिक कारणों से किन्हीं ने अपने पेषों और प्रकार में परिवर्तन किया हो, लेकिन वे जो पेषा कर रहे हैं, वह प्राचीन मौलिकता को दर्षित करते हैं। जनजातियों में अनेक ऐसी जनजातियां हैं, जिन्हें जे. किट्स, मार्टिन, रसेल, रिजले, रसेल–हीरालाल, हट्टन एव के.एस.सिंह (एन्थ्रोपोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया) के संदर्भ साहित्यों व जनगणनाओं में पेषेवर जनजातियां कहा है। ये ही जो हट्टन की जनगणना 1931 के पूर्व पेषावर जातियां बनी, तो उन्हें जाति के रूप में माना गया है। जे.एच. हट्टन [10] के उक्त वर्गीकरण में समूह–तीन के 11 उपसमूह की जनजातियों को जहां षिकारी, मत्स्याखेटक और उद्योगी कहा है, तो वहीं उन्हें जाति (पेषावर) के रूप में बन चुकी होना और उसके साथ ही भील, कोली, गोंड समूह की जातियों को हिन्दूकृत होना दर्षाया है। अर्थात उन्होंने हिन्दू परम्परायें, रीति–रिवाज, संस्कार, धर्म, देवी–देवता, तीज–त्यौहार, बोली आदि अपना लिये हैं। भले ही जनगणना 1931 में अन्य समूहों के विषय में उक्ताषय का उल्लेख न किया गया हो, लेकिन बीते 84 वर्षों में, विषेषकर देष की स्वाधीनता उपरान्त देष के असाधारण सर्वांगीण विकास, षिक्षा, जनसुविधाओं की लोक व्यापकता से जनजातियों में चारित्रिक व लाक्षणिक परिवर्तन द्रुतगति से आया है जिससे उनका मौलिक स्वरूप परिवर्तित हो गया है।

अंततोगत्वा यह कहा जाना उचित होगा, कि लाखों वर्ष प्राचीन निषादजन पूर्णतया स्वदेषी है, जिन्होंने भारत देष में मैदानी, पहाड़ी, नदीय, समुद्रतटीय व नगरीय सभ्यताओं का सृजन किया और कला, संस्कृति, परम्परा, धर्म, उपासना पद्धति, उद्योग–व्यापार, कृषि, ज्ञान–विज्ञान आदि का विकास किया, अनेकों जनजातियों को जन्म दिया। द्रविड़, आर्य, किरात आदि के साथ तात्कालिक परिवेष में निषादजनों ने अपने को समर्पित कर नव–संस्कृतियों के सृजन में योगदान दिया है। यह सत्य है कि प्राचीनतम निषाद, जैसा कि

उपरिदर्षित अनुच्छेदों में दर्षित है, प्रत्येक युग में अनेक प्रतापी व विख्यात राजा देष–प्रदेष–जनपदों में राज्य करते रहे हैं, और जो कभी किसी चक्रवर्ती सम्राट से भी दबी नहीं और उन्हें मित्रता स्थापित करने को बाध्य करती रही, जिससे उसे चातुर्वण्य व्यवस्था से पृथक पंचमवर्ण माना जाता रहा है। लेकिन महाभारत युद्ध के बाद उसका प्रभाव क्षीण होता गया और अब वह भले ही एक छोटी मछुआ–नाविक जाति के रूप में, विषेष रूप से उत्तर व पूर्वोत्तर भारत में अपने मूल नाम से पहिचानी जाती है, लेकिन वह अपने वर्गीय व पर्याय नामों के आधार पर जनसंख्या की दृष्टि से विषाल हैं। यहां विचारणीय है कि निषाद प्रागैतिहासिक जाति है और जो अनेक जनजातियों की जनक है, लेकिन जनजातियां तो संविधान अनुसूचित जनजाति तथा अनुसूचित जाति आदेष 1950 की अनुसूचियों में देष के प्रायः प्रत्येक राज्यों में अधिसूचित हैं, लेकिन निषाद व उसकी उपजातियां, वर्गीय, पर्याय आदि अनुसूची में स्थान पाने से वंचित हैं और आज वे अपने अतिप्रचीन पेषों व आजीविका की रक्षा के लिये संघर्षरत हैं। आज वे बेरोजगारी, भुखमरी से त्रस्त हैं। यह अत्यन्त चिंतनीय और विचारणीय विषय है।

संदर्भ साहित्य

1. श्री कृपालुजी महाराज ''प्रेम रस सिद्धांत'' राधे गोविन्द समिति, द्वारका, नई दिल्ली –110075
2. जैन ज्योति प्रकाष, भारतीय इतिहास एक दृष्टि, भारतीय ज्ञानपीठ, नईदिल्ली–110032, चौथा संस्करण 2004
3. पाण्डे पूर्णिमा, लेख, दैनिक भास्कर जबलपुर दिनाँक–4–01–2010
4. रांगेयराघव, ''महायात्रा गाथा'' अंधेरा रास्ता :1, किताबघर, नई दिल्ली–110002, 1996
5. रांगेयराघव, ''प्राचीन भारतीय परम्परा और इतिहास'', आत्माराम एण्ड सन्स, कष्मीरी गेट, दिल्ली–1100,1990
6. भगवान सिंह, ''भारतीय सभ्यता की निर्मिति'', 2004 इतिहास बोध प्रकाषन, दिल्ली–110092
7. ''हिन्दी विष्वकोष खण्ड–4'' नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
8. ''हिन्दी विष्वकोष खण्ड–6'' नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
9. गुप्ता एम. एल., षर्मा डी. डी., ''सामाजिक मानवषास्त्र'' साहित्य भवन पब्लिकेषन, आगरा, 282003, पुनरिक्षित 2010
10. हट्टन जे. एच. तथा सिंह के. एस., ''सेन्सस ऑफ इण्डिया – 1931'' की टेबुल गअपप – ''रेस, कास्ट्स एण्ड ट्राईब्स''
11. वामनपुराण, श्रीमद् द्वैपायन मुनी वेदव्यास प्रणीत, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
12. संक्षिप्त विष्णु पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
13. श्री श्री विष्णु पुराण, श्री पराषर मुनि प्रणीत दुर्गा पुस्तक भंडार, इलाहाबाद
14. संक्षिप्त गरूण पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
15. पद्मपुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
16. स्कन्द पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
17. भक्त–चरितांक गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
18. श्रीमद् भागवत पुराण, गीता प्रेस, गोरखपुर – 273005
19. निषाद नंदराम, ''निषादों का इतिहास'' मंजुली प्रकाषन, नई दिल्ली, 110023, प्रथम संस्करण–2010